PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 5, ISSUE 4

शिक्षा : नया आयाम, जीवंत अध्ययन की ओर अग्रसित एक नवोन्वेशन

डॉ. प्रवीन कुमार त्रिपाठी
सहा० आचार्य शिक्षाशास्त्र,
रामनिवास महाविद्यालय, चित्रकूट गॉधी,
फर्रूखाबाद ।
उत्तर प्रदेश भारत

शिक्षा हर बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर १० दिसम्बर १९५० को संयुक्त राष्ट्र संघ ने मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा में शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा था कि शिक्षा ऐसी हो जो मानव व्यक्तित्व का पूर्ण विकाश करने में सक्षम हो परन्तु आज के परिप्रेक्ष्य में हम शिक्षा के इस उद्देश्य से हर बच्चे को मीलों दूर पाते हैं।

समय की रफ.तार और आगे बढ़ने की होड़ में आज का समाज अपने बालकों के वास्तविक व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की ओर ले जाने में असफल होता हुआ महसूस होता है। विशाल जनसंख्या को सही रूप में समायोजित कर पाना हमेशा से ही राष्ट्र को चलाने वाली सरकारों की तरफ से उपेक्षित रहा है और इसी कारण से राष्ट्र की सामाजिक व्यवस्था, जातिवाद, आरक्षण, धार्मिक कुरीतियों एवं भ्रष्ट, लालची, क्रूर, अवसरवादी स्वार्थी लोगों के चक्रव्यूह में ऐसी फंसी कि उसे निकालने में जुटे लोग अग्रिम वर्षों तक चाहकर भी इस दलदल से निकालने में अपने आप को अक्षम महसूस करेंगे। ऐसी विकट स्थिति में यदि शिक्षा जो बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार है को प्रदान करके बालक रूपी बीज को ही स्वस्थ पोषण देकर सक्षम बनाने का कार्य किया जाए तब स्वस्थ फल ही इन विभन्न सामाजिक कुरीतियों, व्यसनों से राष्ट्र को सुरक्षित रख सकेगा। इस संबंध में विभन्न प्राच्य एवं पौवार्त्य शिक्षा शास्त्रियों अरस्तू, रूसो, प्लेटो, कमेनियस, फ्रोबेल, जॉन ड्यूीव, डॉ० मॉरिया मांटेसरी,हरर्बट, सारेन कीर्कगार्ड, पेस्तालॉजी, लॉक, रसेल, स्वामी विवेकानन्द, डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णनन्, महात्मा गॉधी, गिज्जू भाई, आचार्य विनाबा भावे, गोपाल कृष्ण गोखले, मदन मोहन मालवीय आदि के शिक्षा के संबंध में दर्शन संबंधी विचारों का अवलोकन करने के उपरांत अनुभव हुआ कि बालकों के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्म गुणों का विकास करने के लिए सहज, सरल, स्वाभाविक, सामंजस्यपूर्ण, सतत् प्रगतशील, नूतन शिक्षण पद्धति ''वर्तमान रूप'' को प्रयोग में लाना होगा। ''वर्तमान रूप'' : यहॉ पर मेरा

''वर्तमान रूप'' से अभिप्राय है सीखने योग्य तथ्यों को वर्तमान रूप में नाट्य रूपान्तर कर उसका विश्लेषणात्मक रूप प्रदान कर रटन्त स्मरण को हतोत्साहित करना है। इस पद्धति के द्धारा बालक को विषय की पृष्ठभूमि में घटनाचक्र का जीवन्त अहसास होता है।

बालक अभिरूचि के साथ अपनी अभिक्षमता का विकास करने हेतु पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करता है। बालक को विषय के संबंध में रोचकता उत्पन्न होने से वह विषय पर अधिक प्रभावी ढंग से अपने आपको कामयाव पाता है। इस पद्धति के फलस्वरूप जीवन्त स्थिति उत्पन्न होने से वह अध्ययन सामग्री से स्व का संगम कर अपने विषय पर अपने आप को विलीन भी करता है और स्व का अनुभव बनाए रखते हुए अधिगम की जाने वाली विषय वस्तु पर निगरानी भी रखने में अपने आप को सक्षम पाता है। वर्तमान व अतीत काल से चली आ रही अधिगम विधियॉ - अविराम, विराम, पूर्ण, अंश, साभिप्राय, प्रासंगिक, प्रेक्षण, विवेचना, आवृत्तिकरण तथा पुन: निरीक्षण, रटकर तथा समझकर सीखने विधियों की तुलना में अधिक उपयोगी साबित हो रही हैं यह विधि करके या प्रयोग करके सीखना पर आधारित है। करके सीखना विधि में बालक किसी कार्य को स्वयं करके देखता है या स्वयं ही विशेष स्वरूप को समझने के लिए कुछ प्रयोग करता है तो इससे वह तेजी से उक्त कार्य को सीख लेता है। मेरी यह विधि को प्रेरणा करके सीखना विधि या प्रयोग करके सीखना विधि से प्रेरणा लेकर तैयार हुई है।

विधि: इस विधि को समझा जा सकता है। यदि हम पूर्व व वर्तमान शिक्षाशास्त्रियों द्धारा बताई हुई शिक्षाओं का पूर्व व वर्तमान विधियों का प्रयोग करने पर विषयवस्तु पर अपने आपको असहज व नीर पाते हैं और वस्तुत: सही अध्ययन न कर पाने के कारण असफल हो जाते हैं। जब हम पूर्व शिक्षाशास्त्रियो को समझना चाहते हैं तो उनके द्धारा लिखी गई बातें व वह हुई शिक्षाशास्त्री हमें अतीत का होने के कारण अनुपयोगी लगता है और किसी भी विषय की शंका का निवारण में उक्त शिक्षाशास्त्री का सहयोग प्राप्त नहीं होता है, ऐसे में शंका का निवारण स्वयं की अज्ञानता के कारण नहीं कर पाते हैं और विद्यार्थी शिक्षक से शंका का निवारण चाहते हैं तो वो भी उक्त विषय पर शिक्षक अज्ञानता के कारण रूचि न लेते हुए प्रमाद का शिकार होकर सहयोग नहीं करते हैं।

ऐसी स्थिति में बालक का विषय से रूझान कम हो जाता है और वह नीरसता व प्रमाद के वशीभूत होकर विषय से भटकने लगता है और विषय को समझने व अधिगम करने में पूर्ण रूपेण सफल नहीं हो पाता है परन्तु इस नये आयाम, जीवन्त अध्ययन, वर्तमान रूप में विषयवस्तु को स्थापित करने पर एक सक्षम शिक्षक की निगरानी में बालक के समक्ष विषयवस्तु को जीवन्त नाटक के रूप में बालक की स्वयं की भागीदारी सुनिश्चत कर उनको उक्त विषयवस्तु के रूप में ही परिवर्तित कर दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति में जब बालक अरस्तु, रूसो, प्लेटो, कमेनियस, फ्रोबेल, जॉन ड्यूीवी, डॉ० मॉरिया मांटेसरी, हरर्बट, सारेन कीर्कगार्ड, पेस्तालॉजी, सर्वपल्ली राधाकृष्णनन्, महात्मा गॉधी, गिज्जू भाई, आचार्य विनोबा भावे, जैसे शिक्षाशास्त्रियों का रूप प्रदान कर उनकी समस्त शिक्षाओं की शिक्षण विधियॉ प्रदान कर उनसे वैसा ही व्यवहार करने को कहा जाता है जैसा कि वह जीवित होते तो करते।

अपनी - अपनी शिक्षाओं को आत्मसात कर वे सभी बालक उन महान शिक्षाशास्त्रियों की शिक्षा के संबंध में दिए गए विचारों से एक दूसरे को परिचित कराते हैं और कक्षा के अन्य छात्र - छात्राएं भी अपने सहपाठियों के नाट्य जीवंत रूप से प्रेरित होकर विषयवस्तु से रूचि अनुभूति कर अपने आपको भी उक्त अधिगम

शिक्षा के अनूठे रूप में आत्मसात कर अधिगम क्रिया सहज, सरल, रूचिपूर्ण और अधिक तार्किक, विश्लेषणात्मक, तथ्यात्मक स्वरूप से, अपने छिपे हुए सर्वोत्तम गुणों को विकसित करने में सफल होता है।

ऐसा परिवर्तन काफी समय तक स्थायी रहता है और वह प्रत्येक अधिगम की जाने वाली विषयवस्तु से अपने सव की स्थिति को आत्मसात करने लगता है परिणामस्वरूप उसके प्रयोग में लाई गई इस नवीन नूतन, नए आयाम, जीवन्त अध्ययन एक नवोन्वेशन से अपने स्व अधिगम को आत्मसात करने की प्रवृत्ति पनपने लगती है और वह रूसो की शिक्षा, **बालक प्रकृति का विशेष फल है उसे उसके साथ ही अपने आप को आत्मसात करने दो,** प्रकृति की प्रत्येक विषयवस्तु से वह अपने आप को आत्मसात करना सीख जाएगा तो वह प्रकृति की हर परिस्थिति से भी सामंजस्य बैठाने की क्रिया को सीख जाएगा, की तरह ही अधिगम की जाने वाली वस्तु से आत्मसात करने की प्रक्रिया सीखने पर वह स्वयं ही इस योग्य हो जाएगा कि वह उन शिक्षाशास्त्रियो द्धारा दी गई शिक्षाओं को आत्मसात कर सीख सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श - डॉ० सीताराम जायसवाल, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा - ७
२. मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ - अरूण कुमार सिंह, आई०एस०बी०एन० :८१-२०८-२४१०-५
३. आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त - डॉ० सरयू प्रसाद चौबे, डॉ० अखिलेश चौबे, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
४. शिक्षामनोविज्ञान - अरूण कुमार सिंह - भारती भवन - पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स
५. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा - डॉ० एस० पी० गुप्ता, डॉ० अलका गुप्ता, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
६. फण्डामेंटल ऑव कम्प्यूटर, प्रज्ञा पब्लिकेशन्स, प्राईवेट लि०
७. विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शिक्षाशास्त्री - डॉ० अखिलेश चौबे शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
८. ग्लोबल कन्सट्रक्शन्स ऑव मलटीकल्चरल एजूकेशन, थ्योरीज् एंड रिएलिटीज, कार्ल ए० ग्रान्ट, जॉय एल० ली०, लारेन्स एरीबम एसोसिएट्स,२००१
९. टीचर एजूकेशन इन इंडिया: एन ऑक्जीलेटरी पर्सपेक्टिव - गोविन्दार्जुन, गिरीश; जय लक्ष्मी टी० के०; गोपाल, मलाथी वी०, एजूकेशन वोल्यूम ११४, नं० २, विन्टर १९९३
१०. आर्टीकल - इन्नोवेशन इन टीचर एजूकेशन - " द इंडियन कन्टेक्सट " जोशी एंड थामस, १९९१, पी० ११ - १५